गणतन्त्र दिवस 26 जनवरी, 2018 पर माननीय कुलपति, प्रोफेसर अशोक कुमार सरयाल जी के भाषण का प्रारूप

- आज गणतंत्र दिवस है। गणतन्त्र दिवस के इस पावन अवसर पर विश्वविद्यालय के एन. सी.सी. कैडेटस, न्यू होली मिशन स्कूल चचियाँ (नगरी) के बैंड कन्टीजैंट के विद्यार्थी, संविधिक अधिकारीगण, शिक्षक, गैर शिक्षक कर्मचारी वर्ग, विद्यार्थी, पत्रकार एवं अन्य श्रोतागण आप सबको मेरी शुभकामनाएं।

- विश्वविद्यालय के अनुसंधान केन्द्रों व कृषि विज्ञान केन्द्रों में कार्यरत अधिकारियों–कर्मचारियों को भी मेरी गणतन्त्र दिवस की शुभकामनाएं।

- गणतन्त्र दिवस भारत का <u>एक राष्ट्रीय पर्व</u> है जो प्रतिवर्ष 26 जनवरी को मनाया जाता है। इसी दिन सन् 1950 को <u>भारत अधिनियम् (Act) 1935</u> को हटाकर भारत सरकार का संविधान लागू किया गया था।

- एक स्वतन्त्र गणराज्य बनने और देश में कानून का राज स्थापित करने के लिए संविधान को <u>26 नवम्बर, 1949</u> को भारतीय संविधान सभा द्वारा अपनाया गया था और 26 जनवरी, 1950 को इसे एक <u>लोकतान्त्रिक सरकार प्रणाली</u> के साथ लागू किया गया था। 26 जनवरी को इसलिए चुना गया था क्योंकि इसी दिन सन् 1930 को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारत को <u>पूर्ण स्वराज</u> घोषित किया था। 26 जनवरी, 1930 से 1947 की स्वतन्त्रता प्राप्ति तक इसे गणतन्त्र दिवस के रूप में मनाया जाता रहा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात 15 अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के रूप में स्वीकार किया गया। भारत

के आजाद होने के बाद संविधान सभा की घोषणा हुई। इसने अपना कार्य 9 दिसम्बर 1947 से आरम्भ किया। संविधान सभा के सदस्य राज्यों की सभाओं के निर्वाचित सदस्यों द्वारा चुने गये थे। डा. भीमराव अम्बेदकर, पंडित जवाहर लाल नेहरू, डा. राजेन्द्र प्रसाद, सरदार बल्लभ भाई पटेल, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद इस सभा के प्रमुख सदस्य थे। संविधान निमार्ण में कुल 22 समितियां थी जिनमें मसौदा समिति सबसे प्रमुख एवं महत्वपूर्ण समिति थी। इस समिति का कार्य संविधान लिखना व निर्माण करना था। मसौदा समिति के अध्यक्ष डा. भीमराव अम्बेदकर थे। इस समिति ने दो वर्ष 11 माह 18 दिन में भारतीय संविधान का निर्माण किया और 26 नवम्बर, 1949 को संविधान सभा के अध्यक्ष डा. राजेन्द्र प्रसाद को सौंप दिया। संविधान सभा ने संविधान निमार्ण के समय कुल 144 दिन बैठक की । इन बैठकों में प्रैस और जनता को भाग लेने की स्वतन्त्रता थी। अनेक सुधारों और बदलावों के बाद सभा के 308 सदस्यों ने 24 जनवरी, 1950 को संविधान की हस्तलिखित कॉपियों पर हस्ताक्षर किए और दो दिन के बाद 26 जनवरी, 1950 को यह संविधान देश भर में लागू हो गया।

- 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस समारोह में भारत के राष्ट्रपति द्वारा भारतीय राष्ट्रीय ध्वज को फहराया जाता है और इसके बाद सामूहिक रूप से खड़े होकर राष्ट्रीय गान गाया जाता है।

- गणतन्त्र दिवस को इसी तरह आज के दिन पूरे देश में उत्साह के साथ मनाया जाता है। हम भी विश्वविद्यालय में आज इस उत्सव को हर्षोल्लास के साथ मना रहे हैं।

- आज 26 जनवरी के दिन देश का संविधान लागू होने से देश के प्रत्येक नागरिक को सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक न्याय,

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतन्त्रता तथा प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त हुई।

- व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखंडता सुनिश्चित करना हर नागरिक का परम कर्तव्य है।

- आप को विदित है कि आजादी के समय से लेकर देश के आगामी 16–17 वर्ष खाद्यान्न संकट के रहे। देश के अन्दर 5.20 करोड़ टन अनाज की पैदावार थीं और 33 करोड़ जनसंख्या के लिए अपर्याप्त खाद्यान्न के कारण अनाज विभिन्न देशों से मंगवाना पड़ता था। भारत के किसानों और वैज्ञानिकों ने 1964–65 में कड़ी मेहनत, गुणवता व उचित बीजों, रासायनिक खादों और सिंचाई के बढ़िया प्रबन्धों को अपनाकर **'हरित क्रांति'** को साकार किया जिससे देश अनाज की प्राप्ति में आत्मनिर्भर हो गया।

- हिमाचल प्रदेश की बात करें तो खाद्यान्न उत्पादन जो यहां वर्ष 1950 में मात्रा 1.99 लाख मीट्रिक टन था, आज लगभग 16 लाख मीट्रिक टन से अधिक पहुंच चुका है। कृषि तथा बागवानी क्षेत्र पर सरकार ने विशेष ध्यान केन्द्रित किया है। बागवानी उत्पादन 1948 में मात्रा **1200** मीट्रिक टन था जो आज लगभग **6.95** लाख मीट्रिक टन पहुंच गया है।

- प्रदेश में सब्जियों का अनुमानित उत्पादन लगभग 17.10 लाख टन तक पंहुच चुका है। जो कि इतिहास का सर्वाधिक उत्पादन है।

- केन्द्र व प्रदेश सरकार ने किसानों की समृद्धि व फसल उत्पादन बढ़ाने के लिए अनेक योजनाएं प्रारम्भ की हैं। इसमें जहां मिट्टी की जांच व परिणाम के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड जैसी कई योजनाएं हैं वहीं प्रधानमन्त्री फसल बीमा योजना एवं किसानों की आय सन 2022 तक दोगुनी करना भी गत वर्षों से शुरू है। हमारे वैज्ञानिक व प्रसार

विशेषज्ञ भी इन योजनाओं की जानकारी किसानों तक पहुंचाने में मदद कर रहे हैं।

- विश्वविद्यालय शिक्षा, शोध व प्रसार कार्यक्रमों को बहुत अच्छे तरीके से निभा रहा है। विश्वविद्यालय द्वारा गत वर्ष Respect Work कार्य का सम्मान, Work Hard मेहनत और Create Work Culture कार्य संस्कृति पैदा करने का संकल्प लिया गया था। विश्वविद्यालय की कार्यपद्धति इसी संकल्प पर आधारित है। इसके फलस्वरूप उपलब्धियों एवं प्रमुख कार्यक्रमों का वर्णन मैंने नववर्ष पर किया था।

- विश्वविद्यालय के 40 वर्षों के इतिहास में पहली बार अध्ययन के स्तर में सकारात्मक परिवर्तन आये हैं। हमारे 193 विद्यार्थियों ने अखिल भारतीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे एस.आर.एफ., जे.आर. एफ. व नेट की परीक्षाओं में बेहतरीन सफलता हासिल की है। ICAR-जूनियर रिसर्च फैलो का परिणाम 92.7 प्रतिशत रहा। इससे हमारे शैक्षणिक कार्यक्रमों की उत्कृष्टता का पता चलता है। देश के अन्य विश्वविद्यालयों से बढ़िया प्रदर्शन करने के लिए हमें चुनौतियाँ भरा और भी कठिन परिश्रम करना है।

- शैक्षणिक स्तर की यह उपलब्धियाँ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास के लिए किये गए सतत प्रयास थे जैसे स्वेच्छिक रूप से अध्यापक रोजाना सुबह 9.00 से 10.00 तथा शाम को 4.30 से 5.30 बजे तक विद्यार्थियों को विभिन्न प्रतिस्पर्धाओं की तैयारी के लिए विशेष कक्षाओं में मार्गदर्शन करते रहे। उदाहरणतयः समेस्टर की शुरूआत से ही कृषि महाविद्यालय के 41 विद्यार्थियों को 49 प्राध्यापकों ने आई.सी.ए. आर. अखिल भारतीय जे.आर.एफ. परीक्षा की तैयारी के लिए स्वेछा से कोचिंग कक्षाएं प्रारम्भ की। अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों को रॉवे ट्रेनिंग में जाने से पहले इन कक्षाओं का सफलतापूर्वक संचालन किया। इस वर्ष भी यह सतत प्रयास जारी रहेंगे।

- किसानों व विद्यार्थियों की बेहतरी के लिए हमें हमेशा तत्पर रहना है। खेती में नई–नई चुनौतियां उत्पन्न होती रहती है। इनका समाधान करना हमारा कर्तव्य है। चाहे समस्या संरक्षित खेती में नए कीट या रोगों की हो या जलवायु परिवर्तन के प्रभावों की, विश्वविद्यालय इन चुनौतियों के प्रति जागरूक है।

- विश्वविद्यालय के लिए कृषि योग्य लगातार घटती जमीन पर अधिक से अधिक खाद्यान्न उत्पादन करना एक चुनौती है। इस चुनौती से हम भली भांति परिचित हैं। इसीलिए विश्वविद्यालय के सभी अनुसंधान कार्यक्रमों को मजबूत किया जा रहा है। अनेक नई किस्मों व तकनीकों पर काम चल रहा है।

- विश्वविद्यालय स्तर पर अनुसन्धान निदेशक डा. आर. एस. जमवाल की अध्यक्षता में एक चार सदस्यीय कमेटी गठित की गई है जो शोध परियोजनाओं की गुणवत्ता को आंकने का कार्य करती है ताकि शोध परियोजनाओं को फन्डिंग ऐजैंसियों को भेजने से पहले हर पहलू की जांच–परख हो सके। अब तक कुल 313.68 करोड़ की 154 शोध परियोजनाएं प्रस्तुत की गई हैं जिनमें 7.95 करोड़ की 40 परियोजनाओं की स्वीकृति प्रदान हो चुकी है। शेष स्वीकृति हेतु विचारणीय स्थिति में हैं।

- हर वैज्ञानिक को कम से कम दो शोध परियोजनाओं पर काम करना होगा।

- विश्वविद्यालय का प्रसार शिक्षा निदेशालय किसानों व कृषि अधिकारियों के लिए निरन्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन कर रहा है। गत वर्ष 918 प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया जिनमें 24061 किसानों ने भाग लिया जो गत वर्ष की अपेक्षा 6000 अधिक है। जैविक खेती, शून्य लागत प्राकृतिक खेती और संरक्षित खेती पर किसानों को प्रशिक्षण दिए जा रहे हैं। जैविक खेती तथा

शून्य लागत खेती पर कृषि विज्ञान केन्द्र उना तथा बजौरा में अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन लगाने के लिए मॉडल तैयार किया गया है। प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी के संकल्प से सिद्धि कार्यक्रम में किसानों को आपको 2022 तक दोगुना करने के लिए विश्वविद्यालय ने 20 उधमी वाला एक वैज्ञानिक मॉडल तैयार किया है जो हिमाचल प्रदेश सरकार के कृषि एवं पशुपालन विभाग को प्रेषित किया गया है। प्रसार शिक्षा निदेशालय ने किसानों विशेषकर युवाओं के लिए रोजगार आधारित प्रशिक्षण देने के लिए सतलुज जल विद्युत निगम लिमिटेड के साथ भी एक समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए थे। ये सभी प्रशिक्षण कार्यक्रम निर्धारित समय में 31 मार्च, 2018 तक सम्पन्न किए जाएंगे। जायका के साथ कृषकों के परशिक्षण हेतु 3. 41 करोड़ रूपये की परियोजनाएं विश्वविद्यालय में चल रहीं हैं।

- आज आवारा तथा बांझ पशुओं की समस्या एक और चुनौती बन चुकी है। माननीय मुख्यमन्त्री श्री जय राम ठाकुर ने भी अवारा पशुओं की समस्या के लिए निजात दिलाने के लिए मन्त्री–मण्डल उप–समिति का गठन किया है । इसी मद्देनजर विश्वविद्यालय के डा. जी. सी. नेगी पशुचिकित्सा विज्ञान एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय के पशु मादा रोग एवं प्रसूती विज्ञान विभाग ने वेटरीनरी अफसरों तथा फार्मासिस्टों के लिए गत दो वर्षों में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत कृत्रिम गर्भाधान पर रिफ्रैशर कोर्स आयोजित किए गए हैं ताकि पशुओं में बांझपन की समस्या को कम किया जा सके। प्रदेश पशुपालन विभाग के वेटरीनरी अफसरों तथा फार्मासिस्टों के लिए ऐसे रिफ्रैशर कोर्स भविष्य में भी आयोजित करने का कार्यक्रम है।
- हमें इस बात का संतोष है कि प्रदेश की 81 प्रतिशत भूमि सिचांई से बंचित होने के बावजूद कृषि विकास में इस विश्वविद्यालय ने

उल्लेखनीय योगदान दिया है। समय–समय पर नई चुनौतियां उत्पन्न होती रहती है। आज सबसे बड़ी चुनौती अधिक से अधिक भूमि को सिंचाई उपलब्ध करवाना है। प्रदेश की लगभग 70 प्रतिशत जनसंख्या अपनी जीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। माननीय मुख्यमन्त्री श्री जय राम ठाकुर ने गत पूर्व राजत्व दिवस के अवसर पर ग्रामीण आर्थिकी को सुदृढ़ करने के लिए कृषि क्षेत्र के विकास को विशेष अधिमान देते हुए जैविक खेती को बढ़ावा देने की घोषणा की है। महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने भी पूर्ण राजत्व दिवस पर शून्य लागत प्राकृतिक कृषि एवं गौ–पालन को लेकर पूरे देश में एक मजबूत आंदोलन चलाने का आहवान किया है ताकि हमारे अन्नदाता किसान भाई इसे पूर्ण रूप से अपना सकें।

- आज गणतन्त्र दिवस कार्यक्रम के बारे में मेरा मानना है कि ऐसे राष्ट्रीय पर्व पर सभी लोग शामिल हुआ करें। जो लोग दूर से आते हैं, वे भी अवश्य पहुंचे ताकि इस राष्ट्रीय पर्व में उत्साहपूर्वक शामिल होकर हम गौरवान्वित हो सके।

- विश्वविद्यालय के एन.सी.सी. कैडेट और स्कूल बैंड के बच्चों द्वारा इतना भव्य प्रदर्शन किया गया वास्तव में इनके मनोवल, हौसंले, आत्मविश्वास और देशभक्ति पर हमसब को गर्व है। चुनौतियों कितनी भी कठिन क्यों न हों उनको स्वीकार कर जीतना ही लक्ष्य है।

- मैं इन बच्चों एवं कैडेट को बधाई देता हूँ। बैंड के अति सुन्दर प्रदर्शन के लिए छात्र कल्याण अधिकारी डॉ एस.सी. गोयल और एन. सी. सी. अधिकारी डॉ अशोक शर्मा व डा. अंकुर शर्मा के अनुमोदन को स्वीकारते हुए 5000 रूपये का इनाम घोषित करता हूँ। अभी में अभिभाषण के उपरान्त एन. सी. सी. अधिकारी डा. अंकुर शर्मा को Lt. पद की piping ceremony का आयोजन किया जाएगा। मैं

डा. अंकुर शर्मा को एन. सी. सी. में commission प्राप्ति की बधाई देता हूँ।

- विद्यार्थियों और बच्चों से प्रेरणा लेते हुए आओ आज पुनः हम सभी नववर्ष के संकल्प को दोहराते हैं कि ''मैं काम का आदर करंगा/करूंगी, कड़ी मेहनत करंगा/करूंगी और विश्वविद्यालय में काम की संस्कृति बढ़ाने में हमेशा अग्रसर रहूंगा/रहूंगी'' **"Respect Work, Work Hard & Create Work Culture".**

- आज के इस कार्यक्रम को आयोजित करने के लिए छात्र कल्याण संगठन के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी प्रशंसा के पात्र हैं

- अन्त में आप सबको गणतन्त्र दिवस की एक बार फिर बधाई।

धन्यवाद!
जय हिन्द, जय हिमाचल
भारत माता की जय!